प्राक्कथन

शोध किसी विषय के अध्ययन या अनुशीलन की सुनिश्चित पद्धति है। शोध-कार्य का उद्देश्य केवल अज्ञात का अन्वेषण और ज्ञात का पुनर्मूल्यांकन करना नहीं है, वरन् ज्ञात को क्रमबद्ध, व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक रूप देना भी है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण तथा शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन से संबंधित कार्य इस दिशा में सार्थक प्रयास माने गए हैं। डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा ने अपने पीएच. डी. शोध-कार्य "पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन (प्रारम्भ से सन् 1990 तक)" को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ से 1993 में सम्पन्न किया। मैं पंजाब प्रदेश में प्राईमरी स्कूल का अध्यापक हूं। सन् 2009 से भारत सरकार के आदेशानुसार 6 से 14 साल के बच्चों का जो स्कूल नहीं जाते हैं उनका हर साल सर्वेक्षण किया जाता है। दूसरा 2011 से भारत सरकार के जनगणना अभियान में अब तक चार बार अपनी सेवाएं दे चुका हूं। इसलिए शोध की सर्वेक्षण पद्धति में मेरा कुछ अनुभव एवं रुचि रही है। प्रस्तुत विषय के संदर्भ में मैं अनेक बार डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा जी से भी मिला; जिनसे मुझे शोध-कार्य में सहयोग के साथ अतुलनीय प्रोत्साहन भी मिला। मुझे अनुभूत हुआ कि प्रस्तुत विषय मेरी समझ एवं अनुभव के प्रतिकूल भी है तथा हिन्दी शोध-जगत् में इसकी उपयोगिता भी है। इस विषय पर मैंने अपने निर्देशक डॉ. सत्यपाल सहगल से विचार-विमर्श किया। उन्होनें भी इस विषय पर कार्य करने हेतु सहमति प्रकट कर दी। डॉ. बह्मवेद शर्मा ने इस विषय पर विवेच्य विश्वविद्यालयों के प्रारम्भ से सन् 1990 तक की कालावधि को अपने शोध का विषय बनाया था। इन वर्षो में शोध-संदर्भो संबंधी जो रिक्तता आ गई थी उसे पूरा करने के लिए मैंने इस विषय "वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः सन् 1991 से 2010 तक" को अपने पूज्नीय गुरुवर डॉ. सत्यपाल सहगल जी के निर्देशन में सम्पन्न किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध 5 खंडों के अंतर्गत 12 अध्यायों में विभक्त है। प्रथम खंड में 1 अध्याय है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया

गया है। द्वितीय खंड में **1** अध्याय है। द्वितीय अध्याय में वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय खंड में **9** अध्याय हैं। तृतीय अध्याय में पश्चिमोत्तरी भारत में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य (सन् **1991** से **2010** तक) का कालक्रमानुसार सूचीकरण दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में शोध-प्रबंधों का प्रमुख वर्ग एवं वर्गगत सूचीकरण दिया गया है। पंचम अध्याय में आदिकाल और भक्तिकाल संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ अध्याय में रीतिकालीन काव्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। सप्तम अध्याय में आधुनिककालीन काव्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। अष्टम अध्याय में कथा-साहित्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। नवम अध्याय में नाटक एवं एकांकी तथा इतर हिदी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। दशम अध्याय में विविध विषयों संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। एकादश अध्याय में पश्चिमोत्तरी भारत में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य का प्रमुख वर्ग एवं वर्गगत संदर्भो में विचार तथा विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ खंड में द्वादश अध्याय में शोध-विषय का सार, उपलब्धियां एवं सीमाएं तथा शोध-संकेत दिए गए हैं। पंचम खंड में परिशिष्ट में सहायक ग्रंध सूची तथा इन्टरनेट साईट्स दी गई हैं।

मैं पूजनीय गुरुवर डॉ. सत्यपाल सहगल जी का हृदय से आभारी हूं, जिनके मार्गनिर्देशन में प्रस्तुत शोध-कार्य सम्पन्न हुआ। इस विषय के संबंध में प्रथमतः मुझे उन्हीं से जानकारी प्राप्त हुई। इनकी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन से ही प्रस्तुत शोध-कार्य सम्पूर्ण हो पाया है।

मैं डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा जी का भी विशेष आभार प्रकट करता हूं, जिन्होनें शोध-प्रबंध के लिए यथा सम्भव सहयोग दिया। इनके पीएच. डी. शोध-कार्य "पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन (प्रारम्भ से सन् **1990** तक)" जो पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **1993** में सम्पन्न हुआ तथा पुस्तक "शोध-

प्रविधि ः सिद्धान्त एवं प्रक्रिया" के आधार पर इस शोध-विषय की रूपरेखा तैयार की गई है। मैं उन सभी विद्वानों, सम्पादकों एवं इन्टरनेट स्थलों के प्रति भी अपना कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं , जिनकी पुस्तकों एवं साईट्स की मदद से इस शोध-प्रबंध को सम्पन्न कर सका।

जीवन की विषम परिस्थितियों को अनुकूलता प्रदान करते हुए शोध-मार्ग में स्नेह, उत्साह एवं ऊर्जा देने वाले पूजनीय माता-पिता (श्री बृजलाल एवं श्रीमती कलावंती देवी), अर्धागनी (श्रीमती सरस्वती) एवं भाई (सतीश कुमार) के समक्ष मैं श्रद्धा भाव से नतमस्तक हूं।

शोध-कार्य की कठिन साधना में मित्रगण के सहयोग को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता, जिन्होनें विचार-विमर्श के माध्यम से शोध-कार्य में अमूल्य सहयोग देकर मुझे कृतार्थ किया। इस विषय में मैं डॉ. पवन कुमार, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, अमित, डॉ. नरेन्द्र कुमार, बदरी प्रसाद, राहुल, मुकेश, प्रेम कुमार, धर्मवीर, सुभाष चन्द्र शर्मा, मोमन राम, रजनीश कुमार और विनोद कुमार आदि के प्रति आभार व्यक्त करता हूं, जिनका भरपूर लाभ उठा कर मैंने प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पूर्ण किया।

इसके अतिरिक्त मैं पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के प्रबंधकीय सदस्यों एवं विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभाग में कार्यरत प्राध्यापकों तथा कर्मचारियों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूं, जिनके माध्यम से प्रस्तुत शोध-प्रबंध की संपूर्ण सामग्री का संचयन कर पाया।

मैं अपने शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्र भाव से विद्वानों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूं। शोध-प्रबंध की व्याकरण एवं टंकण संबंधी त्रुटियों को यथा-सम्भव दूर करने का प्रयास किया गया है। फिर भी कुछ कमी रह गई हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

शोधार्थी

भीमसैन